

इंस्टीट्यूट ऑफ एमिनेंस के तहत तीन साल में यात्राओं पर 2.37 करोड़ रुपये खर्च किए गए

अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान के लिए दिए 7.8 करोड़

बीएचयू

वाराणसी, वरिष्ठ संवाददाता। केंद्र सरकार की इंस्टीट्यूट ऑफ एमिनेंस योजना के तहत अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान के लिए विदेश जाने वाले छात्रों और शिक्षकों को काफी फायदा मिला। तीन साल में बीएचयू ने अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान के लिए यात्राओं के साथ ही परिसर में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों के लिए 7.81 करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च किए। बीएचयू ने सिर्फ एशिया से बाहर के देशों में 237 शिक्षकों को भेजा और इसके लिए उन्हें 2.37 करोड़ रुपये का यात्रा भत्ता दिया गया।

इंस्टीट्यूट ऑफ एमिनेंस (आईओई) के तहत बीएचयू ने 2022 में कुल 31 योजनाएं शुरू की थीं। इनमें एक योजना के तहत शिक्षकों और पीएचडी छात्रों को अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों और कार्यशालाओं में

50 हजार यात्रा भत्ता मिलता है शिक्षकों को एशिया में



01 लाख रुपये दिए जाते हैं एशिया से बाहर जाने पर

- अर्थाभाव में पहले विदेश नहीं जा पाते थे विश्वविद्यालय के शिक्षक और शोध छात्र
- राष्ट्रीय संगोष्ठियों के लिए भी ने 1.38 करोड़ रुपये की धनराशि दी

शामिल होने के लिए यात्रा भत्ता देने का निर्णय लिया गया था। एशियाई देशों में जाने पर शिक्षकों को 50 हजार और शोध छात्रों को 25 हजार रुपये का खर्च दिया जाना था। एशिया से बाहर के देशों के लिए शिक्षकों को एक लाख रुपये और शोध छात्रों को 50 हजार रुपये का भत्ता दिया गया। तीन साल में एशिया के बाहर के देशों में जाने वाले शिक्षकों की संख्या 237 थी। जबकि एशियाई देशों में जाने

वालों की संख्या 74 थी। इसी तरह एशियाई देशों में जाने वाले शोध छात्रों की संख्या 66 थी जबकि 165 शोध छात्र एशिया से बाहर के देशों की यात्रा पर गए। सबसे ज्यादा यात्राएं अप्रैल-24 से 26 दिसंबर-24 तक हुईं। तीन साल में शिक्षकों की यात्राओं पर कुल खर्च 2 करोड़ 74 लाख 40 हजार रुपये जबकि शोधार्थियों की यात्राओं पर एक करोड़ 225 हजार रुपये रहा। इसी तरह बीएचयू ने अंतरराष्ट्रीय

237 शिक्षकों को मिला एशिया से बाहर के देशों में जाने का मौका

आईओई के बाद भी जारी रहेगी योजना

तीन जनवरी को हुई एकेडमिक काउंसिल की बैठक में उन योजनाओं पर सहमति दी गई जिन्हें आईओई का समयकाल पूरा होने के बाद भी बीएचयू अपने संसाधनों से जारी रखेगा। 25 योजनाओं की सूची में शिक्षकों और शोधार्थियों को किराया भत्ता देने की यह योजना भी शामिल है। बीएचयू आईओई योजना को दो वर्ष बढ़ाने के लिए भी शिक्षा मंत्रालय को लिख चुका है। योजना को एक्स्टेंशन मिला तो आईओई के अंतर्गत बचे लगभग 400 करोड़ रुपये का बेहतर ढंग से इस्तेमाल किया जा सकेगा।

संगोष्ठियों के आयोजन पर आई से चार लाख रुपये और राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन पर 40 हजार से डेढ़ लाख रुपये तक का अनुदान दिया। तीन साल में बीएचयू में हुई 68 अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों के लिए बीएचयू ने 2.48 करोड़ रुपये आईओई के तहत दिए गए। इस काल में राष्ट्रीय संगोष्ठियों के लिए भी बीएचयू ने 1.38 करोड़ रुपये की धनराशि दी।

पुराने अस्पताल से जुड़ेगा बीएचयू का सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक

जागरण संवाददाता, वाराणसी : बीएचयू के सर सुंदरलाल अस्पताल में छह तल के सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक में कैंसर, हृदय, गैस्ट्रो व किडनी रोगियों का विशेष उपचार होता है। एक हजार से अधिक मरीजों का यहाँ पर इलाज होता है। ऊपरी तलों पर अलग-अलग विभागों के वार्ड हैं जबकि भूतल पर ओपीडी संचालित होती है। इस ब्लॉक के विभागों का जुड़ाव हमेशा पुरानी बिल्डिंग के अस्पताल से रहता है क्योंकि अधिकांश जरूरी जांच और दूसरे विभागों के सुझाव के लिए मरीजों को इसी बिल्डिंग में भेजा जाता है।

सड़क मार्ग होने के कारण मरीजों को स्ट्रेचर व व्हील चेयर पर ले जाने में काफी असुविधा होती है, लेकिन अस्पताल प्रबंधन ने कंक्रीट का नया ट्रंक (पाथवे) बनाने का फैसला किया है। जालीदार और छायायुक्त पाथवे से ट्राली का मूवमेंट आसान हो जाएगा। मरीजों को आसानी से एसएसवी से मुख्य अस्पताल में ले जाया जा सकेगा। 300 मीटर ट्रंक के लिए टेंडर फाइनल होने के बाद काम भी शुरू कर दिया गया है। एक सप्ताह में प्रोजेक्ट कार्यशील हो जाएगा। सर सुंदरलाल अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डा. कैलाश कुमार ने बताया कि पाथवे बनाने के लिए उस स्थान का चयन किया गया है, जिसका कोई इस्तेमाल नहीं होता था। यहाँ पर कूड़ा फेंका जाता था, लेकिन अब पाथवे से एक साथ दो ट्राली का मूवमेंट हो सकेगा।

बौद्धिक बनावट की सशक्त कविताएं हैं अपूर्वा की: अखिलेश

वाराणसी। युवा कवि रविशंकर उपाध्याय की स्मृति में दिया जाने वाला 'रविशंकर उपाध्याय स्मृति युवा कविता पुरस्कार' वर्ष 2025 के लिए बगोदर, झारखंड की युवा कवयित्री अपूर्वा श्रीवास्तव को दिया गया। वरिष्ठ आलोचक अरुण होता की अनुशंसा पर निर्णायक मंडल ने युवा कवयित्री को यह सम्मान दिया। रविशंकर उपाध्याय स्मृति संस्थान द्वारा बीएचयू के हिंदी विभाग के आचार्य रामचंद्र शुक्ल सभागार में गत दिनों पुरस्कार अर्पण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि वरिष्ठ कथाकार अखिलेश जी व अध्यक्ष के रूप में वरिष्ठ आलोचक ओमप्रकाश सिंह उपस्थित रहे। युवा कवयित्री को अंगवस्त्रम, प्रशस्ति पत्र व पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया गया। रविशंकर उपाध्याय स्मृति संस्थान के संरक्षक प्रो.श्रीप्रकाश शुक्ल ने सम्मानित कवयित्री के प्रशस्ति पत्र का वाचन किया।

मुख्य अतिथि तथा प्रतिष्ठित कथाकार अखिलेश ने कहा कि

समारोह-2025 का आयोजन

बीएचयू के हिंदी विभाग के सभागार में रविशंकर उपाध्याय स्मृति युवा कविता पुरस्कार

रविशंकर उपाध्याय पुरस्कार से पुरस्कृत कवियों ने काव्य क्षेत्र में निरंतर ऊंचाई हासिल की है और काव्य जगत में अपनी अलग पहचान बनाई है। अपूर्वा की कविताओं में एक ओर आदिवासी समाज की जीवनशक्ति झलकती है तो वहीं दूसरी ओर बौद्धिक कविता का जो ठोसपन होता है वह भी अपूर्वा की कविताओं में देखने को मिलता है।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए वरिष्ठ आलोचक ओमप्रकाश सिंह ने सम्मानित कवयित्री को बधाई देते हुए कहा कि अपूर्वा की कविताएं कठिन कविकर्म के समय में अपूर्वा तमाम मानवीय बातों को निकालती हैं। ये कविताएं गंभीर साधना से निरसृत हैं,



जिनमें नए पन के साथ विषयों को नया अर्थ देने की कोशिश की गई है। सम्मानित युवा कवयित्री अपूर्वा ने कहा कि कविता मेरे लिए वह स्मृति है जहां मैं स्वतंत्र होकर मनुष्य होने और मनुष्य बनने के बीच की खाई को पाटने का प्रयत्न कर सकती हूँ। कविता में मनुष्य होने के साथ-साथ उसके सामने उपस्थित संकटों को भी मैं देख सकती

हूँ। युवा आलोचक महेंद्र प्रसाद कुशवाहा ने अपूर्वा श्रीवास्तव की कविताओं पर आलोचकीय वक्तव्य देते हुए कहा कि अपूर्वा की कविताएं अपने शिल्प और कथ्य में न केवल समृद्ध हैं बल्कि उनमें परिपक्वता का स्तर भी काफी अच्छा है। ऐसी ही एक कविता 'मां क्री एड़ियां' है। कार्यक्रम का संचालन युवा आलोचक जगन्नाथ दुबे

काव्यपाठ किया। सत्र का संचालन कुमार मंगलम ने किया। धन्यवाद ज्ञापन आदित्य विक्रम सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो.बलिराज पांडेय, प्रो.आशीष त्रिपाठी, प्रो.नीरज खरे, प्रो.प्रभाकर सिंह, प्रो. देवेंद्र मिश्र, डा. प्रभात मिश्र, डा. रविशंकर सोनकर, डा. प्रियंका सोनकर, डा. शैलेन्द्र सिंह व छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही।

व धन्यवाद ज्ञापन संयोजक वंशीधर उपाध्याय ने किया। स्वागत वक्तव्य विंध्याचल यादव ने दिया। दूसरे सत्र में युवा कवियों का कवितापाठ हुआ, जिसमें सुनील शर्मा की अध्यक्षता में शैलेन्द्र शुक्ल, गौरव भारती, केतन यादव, गोलेन्द्र पटेल, तापस शुक्ल, तनुज कुमार, महेश सिंह, पूजा कुमारी, सनत कुमार, काजल कुमारी व अपूर्वा श्रीवास्तव ने

बीएचयू में ज्योतिष के सूर्य 4 सिद्धांत की पढ़ाई अब आसान

पहल

ज्योतिष विभाग में गणित के मानों की तीव्र गणना के लिए सॉफ्टवेयर का हुआ लोकार्पण

वाराणसी। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के ज्योतिष विद्या एवं धर्म विज्ञान संकाय में ज्योतिष के सूर्य सिद्धांत की पढ़ाई अब आसान होगी। ज्योतिष विभाग में गणित के मानों की तीव्र गणना के लिए सॉफ्टवेयर का लोकार्पण किया गया है। महीनों में बनने वाला पंचांग अब पांच मिनट में तैयार किए जा सकेंगे। शास्त्री और आचार्य से लेकर पीएचडी करने वाले शोधार्थियों को सहूलियत देने के लिए ये महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है।

इस सॉफ्टवेयर पर ऑनलाइन कहीं से भी ज्योतिष संबंधी काम किया जा सकता है। गूगल पर सूर्य सिद्धांत डॉट इन पर क्लिक कर कोई भी छात्र-छात्राएं

या प्रोफेसर अपना शोध कार्य कर सकते हैं। इस सॉफ्टवेयर के जरिए कई वर्षों तक के ग्रहों के रहस्य के बारे में पता कर सकेंगे। संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के प्रमुख प्रो. राजाराम शुक्ल ने बताया कि तीन साल से सॉफ्टवेयर तैयार किया जा रहा था। डा. सुभाष पांडेय के निर्देशन में डा. अमित कुमार मिश्र और डा. गौरव मिश्र ने इसे तैयार किया है।

डा. सुभाष पांडेय ने कहा कि किसी भी वर्ष का पंचांग बनाना हो, तिथियों की शुद्धि और ग्रहों की चाल, गति और स्थितियों का पता लगाने के लिए जो भी गणित सूत्रों का इस्तेमाल किया जाता है, उन सबका आकलन पांच मिनट में लैपटॉप में किया जा सकता है। सृष्टि निर्माण से लेकर आगामी कई वर्षों की भविष्यवाणी में इस्तेमाल होने वाले गणितीय मान को आसानी से पता किया जा सकता है।

शीतयुद्ध छोड़ा, धुरंधरों ने सब्र तोड़ा



**कैपस
कथा**

संग्राम सिंह

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के अस्पताल में दो 'धुरंधरों' का शीतयुद्ध बहुतों के पसीने छुड़ा चुका है। दो तलवारें लंबे समय से टकरा रही हैं। लंबे समय से दोनों एक-दूसरे को

नाकारा और खुद को काबिल डाक्टर मानते हैं। कुछ दिन पहले ही अंदर की लड़ाई सरेआम हो गई। धुरंधरों का सब्र टूट गया। खरीद-फरोख्त की फाइल और मुँह के ताव ने माहौल गर्म कर दिया। दोनों भिड़ गए। आरोप-प्रत्यारोप की बौछारें होने लगीं। बैठक में गाली-गलौच और मारपीट की स्थिति बन गई। अब हर कोई घटनाक्रम को अपने तरीके से पेश कर रहा है। सभी को जिज्ञासा है कि अब आगे क्या होगा। कैपस में बात फैली तो 'बड़े साहब' ने दोनों की सुलाह कराई है लेकिन साथी डाक्टरों को महसूस होता है कि 'जुबानी चिंगारी' को शोला बनने से अब शायद ही कोई रोक पाएगा।



बदले माहौल में ढलने लगे

वक्त के साथ चलना जिंदगी है...। बीएचयू के गुरुजी को यह आत्मबोध बहुत दिन बाद हुआ है। लंबे समय से वह साथी गुरुओं पर कहर बनकर टूटे हैं। उनकी एक नहीं चलनी दी। हमेशा अपनी ही करते थे। जिसे चाहा उसे अंश से फर्श और फर्श से अंश पर पहुंचाकर ही दम लिया। वैसे वह दुश्मनों को रगड़ने में माहिर हैं, लेकिन आज कल वह शांति ज्ञान दे रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके 'आका' जा चुके हैं। उन्हें अच्छी तरह पता है कि उन्होंने जिनको रेला है, वह भी मौका देखकर चौका जरूर मारेंगे, इसलिए उन्होंने सार्वजनिक कार्यक्रमों में जाना कम कर दिया है। अपने करीबी से जुड़े एक कार्यक्रम में एक साथी को बोलने लगे कि अभी तक जो भी हुआ, उसे लोगों को भूल जाना चाहिए। उनकी किसी से कोई रंजिश नहीं थी, जरूर कुछ लोगों को ठेस पहुंची होगी, लेकिन उनका मकसद बदलाव था।

कुर्सी जरूर बदली, मगर जड़ता नहीं

बीएचयू में पुराने हुजूर ने एक 'अधिकारी जी' के 'पर' कतर दिए थे। उन्होंने यह सोचकर बदलाव किया था कि विभाग में जड़ता पूरी तरह खत्म हो जाए लेकिन हुजूर सही 'सेनापति' को पहचानने में फिर से गच्चा खा गए। वह कमजोर को धुरंधर बनाने की बेकार कोशिश में जुट गए। क्योंकि अभी तक अधिकारी जी जिस विभाग में थे, वहीं अपना काम नहीं कर पाए। विवि की राष्ट्रीय स्तर पर खूब छीछालेदार हुई। कैपस का नाम खराब हुआ। ऐसे में उन्हें बदलना पड़ा। दोबारा भरोसा करने का खामियाजा हुजूर को भी भुगतना पड़ा। कामों को सही ढंग से प्रचारित नहीं करने के कारण ही हुजूर की खराब क्रेज में कोई सुधार नहीं आया, अंत में उनका भी पत्ता कट गया।

कभी नस काटी, आज शेखी बघारते

आइएमएस बीएचयू में एम्स जैसी सुविधाएं देने की पहल शुरू है। बहुतों की बाँछें खिल गई हैं, हर कोई अपने तरीके से नफा-नुकसान का आकलन कर रहा है। ऐसे में एक 'डाक्टर जी' को अपनी ब्रांडिंग से ही फुरसत नहीं है। वह अपनी ही पीठ ठोक रहे हैं। लोगों से अपनी उपलब्धियां गिनाते नहीं थक रहे। कहते हैं कि बरिष्ठता के हिसाब से उन्हें उचित सम्मान नहीं मिला। वह यूं शेखी बघारते भूल जाते हैं कि पब्लिक सब जानती है। एक दिन वह एक मरीज की नस काट लिए थे। उनकी लापरवाही की कोमत मरीज को जान देकर चुकानी पड़ी थी। मामले में खूब हो-हल्ला मचा, लेकिन सफेद कोट के बजाय 'जुगाड़ी कवच' पहने डाक्टर जी का कोई बाल-बांका नहीं कर सका। अब तो वह उम्मीद पाले बैठे हैं कि आइएमएस में उन्हें जरूर कोई ओहदा मिलेगा ताकि बहती गंगा में हाथ धोने का मौका मिले।

निशुल्क पंजीकरण कराने के लिए आज अंतिम मौका

आईआईटी के शोधार्थियों को रिसर्च राइटिंग के लिए 5 दिन फ्री वर्कशॉप

माई सिटी रिपोर्टर

वाराणसी। आईआईटी बीएचयू में पीएचडी करने वाले छात्रों को बेहतर लेखन शैली की ट्रेनिंग दी जाएगी। 27 से लेकर 31 जनवरी के बीच कुल पांच दिन तक वर्कशॉप चलेगी। रजिस्ट्रेशन बिल्कुल फ्री है।

कार्यशाला में हिस्सा लेने के लिए आज आवेदन की अंतिम तिथि है। पांच दिनों की ट्रेनिंग में पीएचडी छात्र और छात्राओं को रिसर्च से जुड़े आवश्यक उपकरणों और जरूरतों से लैस किया जाएगा।

कार्यक्रम आईआईटी बीएचयू के एनी बेसेंट लेक्चर थियेटर में किया जाएगा। वर्कशॉप में अनुसंधान संगठन, क्रिटिकल थिंकिंग और एनालिसिस, एकेडमिक की लेखन शैली, संपादन और प्रूफरीडिंग, डेटा और विजुअल प्रजेंटेशन की

क्रिटिकल थिंकिंग, डेटा और विजुअल प्रजेंटेशन की तकनीक सीखेंगे छात्र

31

जनवरी तक
चलेगी
कार्यशाला

तकनीक को प्रजेंटेशन के साथ समझाया जाएगा।

कार्यक्रम का समन्वयक ह्यूमैनिटिज स्टडीज विभाग के प्रो. अजीत कुमार मिश्रा और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. श्याम कमल को बनाया गया है। वर्कशॉप का आयोजन संस्थान के सेंटर फॉर डेवलपमेंट एंड एजुकेशनल टेक्नोलॉजी की ओर से कराया जा रहा है।

डिफेंस कारिडोर विकसित करने में आइआइटी बीएचयू होगा सहभागी

रक्षा क्षेत्र के लिए मालवीय उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने की तैयारी

संजय सिंह • जागरण

वाराणसी : प्रदेश में डिफेंस कारिडोर विकसित करने के लिए आइआइटी बीएचयू भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। सैन्य उपकरणों और हथियारों के निर्माण, अनुसंधान और विकास के लिए नई तकनीकों पर मंथन करना होगा। इसका मुख्य उद्देश्य देश की रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना और रक्षा उद्योग को आत्मनिर्भर बनाना रहेगा। रक्षा क्षेत्र के लिए मालवीय उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने की तैयारी है।

प्रदेश सरकार ने आइआइटी बीएचयू को प्रोजेक्ट का अहम भागीदार बनाया है। उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीडा) से अनुबंध हुआ है, अब सरकार की तरफ से विनिर्माण क्षेत्र में आरएंडडी (अनुसंधान एवं विकास) सुविधाओं के निर्माण पर कार्य होगा। रक्षा सामग्रियों एवं प्रिसिजन इंजीनियरिंग केंद्र आदि के लिए करीब 69 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। ऐसे में आइआइटी अब रक्षा से जुड़े औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए कौशल विकास केंद्र के रूप में काम करेगा।

इसरो (भारतीय अंतरिक्ष



यूपी में डिफेंस कारिडोर के लिए संस्थान की भूमिका अहम होगी। कई तरह की परियोजनाओं पर काम हो रहा है। शीघ्र ही रक्षा क्षेत्र में नवाचार देखने को मिलेगा।

- प्रो. अमित पात्रा, निदेशक, आइआइटी बीएचयू।



- सैन्य उपकरणों, हथियारों के निर्माण व अनुसंधान में तकनीक विकसित करने को 69 करोड़ आवंटित
- संस्थान का उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के साथ समझौता हुआ

अनुसंधान संगठन) ने आइआइटी बीएचयू को अंतरिक्ष के लिए क्षेत्रीय शैक्षणिक केंद्र के रूप में मान्यता दी है। इस केंद्र ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की भविष्य की तकनीकी और कार्यक्रम संबंधी जरूरतों के लिए प्रासंगिक क्षेत्रों में उन्नत अनुसंधान कर रहा है। इसके अलावा मध्य क्षेत्र में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए समन्वयक के रूप में कार्य कर रहा है, जिसमें छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश शामिल हैं। अनुसंधान और विकास गतिविधियों में भाग लेने के लिए विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्टता के अन्य संस्थानों को भी शामिल कर रहा है। इसरो और

आइआइटी ने कार्यक्रम में भाग लेने और अंतरिक्ष कार्यक्रम के प्रासंगिक अनुसंधान क्षेत्रों में संयुक्त परियोजना प्रस्ताव विकसित करेगा।

आइआइटी बीएचयू और नार्दन कोलफील्ड लिमिटेड ने ऊर्जा क्षेत्र में खनिज संरक्षण, स्वच्छ प्रौद्योगिकियों में खनन उत्पादकता व विकास के मद्देनजर मजबूत उद्योग-संस्थान साझेदारी सुनिश्चित करने के लिए एक साथ काम करने का निर्णय लिया है। वाराणसी, सिंगरौली व सोनभद्र के आस-पास के क्षेत्र में सामाजिक उत्थान की योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाएगा। प्रोजेक्ट में संस्थान के इंक्यूबेशन सेल और कोल रिसर्च लैब को शामिल किया गया है।

रिसर्च आईआईटी बीएचयू में चल रही रिसर्च, जल्द ही परिणाम होंगे जारी 3

ईईजी बता देगा आपने पढ़ाई की है या नहीं

i SPECIAL

varanasi@inext.co.in

VARANASI (14 Jan):

इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राम (ईईजी) एक ऐसा डिवाइस है, जिससे माइंड की गतिविधि को मापा जाता है। दरअसल, इसका काम ह्यूमन विहेवियर को कैच करना है और दिमाग द्वारा दिए गए साइन के बारे में पता करना है। इसका यूज एजुकेशन सेक्टर में भी किया जा रहा है। इसे बताने का मकसद ये है कि आईआईटी बीएचयू एक नई रिसर्च कर रहा है, जिसके तहत ईईजी से पता चल जाएगा कि आप क्लास में अच्छे से टॉपिक को पढ़ कर आए हैं या नहीं। इस पर अभी काम चल रहा है। आईये जानते हैं क्या है रिसर्च का पैटर्न।



ये है प्रॉसेस

स्टूडेंट को एक टॉपिक वीडियो दी जाती है, जिसे उन्हें घर या खाली टाइम पर देखना होता है। अब चैट जीपीटी के जमाने में कैसे पता करें कि बच्चे ने वीडियो पूरी देखी है या नहीं। इसलिए क्लास में डिवाइस बच्चे के दिमाग पर लगाया जाता है। ये कंप्यूटर को साइन देता है कि स्टूडेंट ने पूरी वीडियो देखी है या नहीं। इसे कैच करने का प्रयास करता है। हालांकि जो भी वीडियो स्टूडेंट को दी गई होती है, उससे जुड़ी जानकारी स्टूडेंट को बोलनी भी पड़ती है।

ब्रेन के साइन का करता है पता

आईआईटी बीएचयू के डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर साइंस में यह रिसर्च प्रोफेसर बिद्युत पात्रा द्वारा की जा रही है। इसमें स्टूडेंट पर डिवाइस लगाकर रिसर्च की जा रही है कि क्या ईईजी डिवाइस ब्रेन को अच्छी तरह से कैच करके बता सकता है कि दिमाग कैसे साइन देता है।

एआई का अहम रोल

इस रिसर्च में एआई का अहम रोल है, जोकि ये पता करने में मदद कर रहा है कि डिवाइस ठीक से काम कर रहा है या नहीं या फिर वह किस तरह का साइन देता है। आने वाले समय में पता चलेगा कि क्या ये रिसर्च सफल हुई या फिर नहीं।



ईईजी वायरलेस डिवाइस होता है, जिसके जरिए ह्यूमन माइंड को स्कैन किया जाता है। इसी पर एक रिसर्च चल रही है, जिसे करने में एआई की मदद ली जा रही है।

प्रो. बिद्युत पात्रा, डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर साइंस, आईआईटी